

भारतीय विदेशी व्यापार सन्तुलन के प्रतिकूल होने के क्या कारण हैं?
भारत सरकार द्वारा इसके सुधार के सम्बन्ध में किये गये प्रयत्नों की
समीक्षा कीजिए।

Ans. स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से अभी तक भारत का विदेशी व्यापार
सन्तुलन प्रतिकूल रहा है, जिसके निम्न कारण हैं

खाद्यान्नों के आयात में वृद्धि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में
प्रतिवर्ष कम अथवा अधिक परिमाण में खाद्य संकट की समस्या उत्पन्न
होती रही है, जिसके कारण विदेशों से लाखों टन प्रतिवर्ष खाद्यान्नों का
आयात करना पड़ा है। प्रथम तीन योजनाओं में लगभग 2,289 करोड़
रुपये के खाद्यान्नों का आयात किया गया। इससे भारत द्वारा विदेशों
को किया गया भुगतान बढ़ता गया और विदेशी व्यापार सन्तुलन
प्रतिकूल होता रहा है।

2. कच्चे माल के आयात में वृद्धि : देश के विभाजन के फलस्वरूप
गेहूँ, कपास, जूट आदि के उत्पादन क्षेत्र पाकिस्तान में चले गये, किन्तु
सूती वस्त्र और जूट के अधिकांश मिलें भारत में रह गयीं। इससे भारत
में कच्चे माल की कमी हुई, जिसे दूर करने के लिए इन सब चीजों के
आयात पर बहुत अधिक परिमाण में व्यय करना पड़ा जिससे विदेशी
व्यापार सन्तुलन को प्रतिकूल होने में बढ़ावा मिला।

3. मशीनों के आयात में वृद्धि : देश में विकासात्मक कार्य को
योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न पंचवर्षीय योजना
के द्वारा निर्माणात्मक कार्यों को क्रियान्वित किया गया जिसके लिए
विदेशों से बड़े परिमाण में मशीनों का आयात किया गया। औद्योगीकरण
को तीव्र गति देने के लिए भी विदेशी मशीनों के आयात में वृद्धि होती

गयी। प्रायः विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में औसतन 421 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष के हिसाब से विदेशी मशीनों का आयात किया गया है। इससे भी विदेशों को किये गये भुगतान का बोझ बढ़ा और विदेशी व्यापार सन्तुलन प्रतिकूल होता गया।

4. विदेशी ऋण का बोझ : विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए सरकार ने कई प्रकार के विदेशी ऋण प्राप्त किये हैं। ऋण और मूलधन के भुगतान का बोझ बढ़ने से भी विदेशी व्यापार सन्तुलन प्रतिकूल होता गया।

5. अवमूल्यन सम्बन्धी दोषपूर्ण नीतियाँ : भारत सरकार ने निर्यात को प्रोत्साहन देने के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 1949 में एवं 1966 में भारतीय मुद्रा का अवमूल्यन किया। परन्तु निर्यात सामग्रियाँ निम्न कोटि की होने के कारण एक ओर विदेशों में उसकी माँग में कोई विशेष वृद्धि नहीं हुई और दूसरी ओर विदेशी ऋण (ब्याज एवं मूलधन) के भुगतान का बोझ भारत पर बढ़ गया। इससे विदेशी व्यापार सन्तुलन प्रतिकूल होने में वृद्धि हुई।

6. भारतीय निर्यात में गुणात्मक एवं परिमाणात्मक दोष : भारतीय निर्यात सम्बन्धी चीजों की विविधता पर समुचित ध्यान नहीं दिया गया है, जिससे विदेशी बाजार के विस्तार में वृद्धि सन्तोषजनक नहीं हो पायी है। दूसरी ओर निर्यात सामग्रियों की निम्न कोटि का होना भी विदेशी बाजार के विस्तार में घातक सिद्ध हुआ है। अतः निर्यात का सन्तुलन बिगड़ता ही गया।

7. अन्य कारण : उपर्युक्त महत्वपूर्ण कारणों के अतिरिक्त विदेशों में भारतीय छात्रों द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए जाने में वृद्धि, विदेशों

में दूतावास की स्थापना और उस पर बढ़ते हुए व्यय, पर्यटन के लिए विदेश-गमन में वृद्धि आदि कारणों से विदेशी व्यापार सन्तुलन के प्रतिकूल होने में बढ़ावा मिला है।

प्रतिकूल व्यापार सन्तुलन सुधारने के लिए भारत सरकार ने ये प्रयत्न किये हैं-

परिमाणात्मक एवं गुणात्मक वृद्धि कर विदेशों में माँग बढ़ाने के लिए अनेक प्रकार का निर्यात में परिमाणात्मक एवं गुणात्मक वृद्धि भारत सरकार निर्यात में प्रयत्न करती रही है। इससे निर्यात-प्रोत्साहन हुआ है। 2. आयात-नियंत्रण : प्रतिकूल व्यापार सन्तुलन को अनुकूल बनाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने समय-समय पर अपनी आयात-नीति द्वारा कड़ा नियंत्रण लगा कर, केवल

नितान्त आवश्यक वस्तुओं के आयात पर ही बल दिया है।

विनिमय नियंत्रण : विदेशी मुद्रा से अलाभकारी उपयोगों को हतोत्साहित करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने विनिमय-नियंत्रण के सम्बन्ध में रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया को बड़े व्यापक अधिकार दिये हैं। विनिमय नियंत्रण सम्बन्धी नियमों के उल्लंघन पर कड़े दण्डों का विधान कर विदेशी व्यापार सन्तुलन की प्रतिकूलता को घटाने में महत्वपूर्ण प्रयत्न किये हैं।

4. द्विपक्षीय व्यापारिक समझौते : भारत सरकार ने कई नवीन राष्ट्रों के साथ द्विपक्षीय व्यापारिक समझौते किये हैं, जिनके द्वारा भारतीय चीजों के विदेशी बाजार में बहुत बड़ी वृद्धि हुई है और व्यापार सन्तुलन की प्रतिकूलता घटी है। भारत ने विभिन्न देशों से द्विपक्षीय व्यापारिक

समझौता किया है। इन समझौतों के अन्तर्गत विदेशी मुद्रा सम्बन्धी कठिनाइयों का सामना किये बिना सम्बन्धित देशों से माल आयात किया जाता है। भारत का इस प्रकार का समझौता रूस, इटली और पोलैण्ड आदि देशों के साथ हुआ है।

5. अधिक उत्पादन आन्दोलन : भारत सरकार ने आयात घटाने और निर्यात बढ़ाने के लिए अधिक अन्न उपजाओ' आन्दोलन, 'अधिक उत्पादन बढ़ाओ' आन्दोलन, हरित क्रान्ति' आदि का सहारा लिया है। जिससे उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

6. राजकीय व्यापार निगम की स्थापना : इस निगम ने निर्यात को प्रोत्साहित करने में एवं आयात को घटाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत सरकार ने व्यापार सन्तुलन की प्रतिकूलता की स्थिति को सुधारने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। परन्तु अभी तक हमारा व्यापार सन्तुलन घाटे में ही है। देश में कम आयात करके और अधिक से अधिक निर्यात करके ही हम इस घाटे को पूरा कर सकते हैं। प्रत्येक योजना में निर्यात वृद्धि का लक्ष्य अवश्य बढ़ाया जाता है।